P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्रवास के कारण एवं प्रभाव (देहरादून जनपद के विशेष सन्दर्भ में)

अर्चना नौटियाल
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
डी0ए0वी0 (पी0जी0) कॉलेज,
देहरादून, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

प्रवास मानव की उत्पत्ति के समय से चली आ रही प्रक्रिया है जिसमें अपने वर्तमान स्थान पर आवश्यकताओं की पूर्ति न होने की स्थिति में सम्भावनाओं वाले स्थान की ओर गमन करता है। यह सामाजिक, आर्थिक एवं जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से सम्बन्धित हो सकती है। यह शोधपत्र जनपद देहरादून की प्रवास प्रवृत्ति एवं प्रवास के कारणों को दर्शाता है। किस प्रकार रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी जरूरतें एक बड़ी संख्या में जनसंख्या के विस्थापित होने का कारण बनता है। सम्पूर्ण उत्तराखण्ड प्रवास की समस्या से ग्रसित है। जिसमें ग्रामीण, विशेषतः पर्वतीय क्षेत्र सम्मिलित है। यहां पर प्रवास जनांकिकीय असन्तुलन के साथ–साथ आर्थिक असन्तुलन का प्रमुख कारण बनकर उभरा है। जनपद देहरादून राज्य के रोजगार, शिक्षा और राजनीतिक सम्भावनाओं का केन्द्र बना है। इसके साथ ही राज्य के हर जनपद से जनसंख्या का प्रवाह इस क्षेत्र में हुआ है।

मुख्य शब्द : जनसंख्या प्रवास, उत्प्रवास–आप्रवास उत्तराखण्ड, जनपद देहरादून, असन्तुलित विकास, जनसंख्या केन्द्रीयकरण, पर्वतीय क्षेत्रों में सम्भावनायें।

प्रस्तावना

मानव के प्रवास का इतिहास मानव के इतिहास के समकालीन ही रहा है। अपनी भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मानव एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है। **ट्रिबार्थ** के अनुसार **''जनसंख्या के अध्ययन में जन्म–मृत्यु के साथ ही प्रवास भी आवश्यक तथा महत्वपूर्ण भाग है।''**[1] यह परिवर्तनीयता का सूचकांक है जो किसी स्थान के आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक एवं राजनीतिक महत्व को इंगित करता है। **संयुक्त राष्ट्र संघ** का प्रवास के विषय में विचार है कि **''प्रवास सामान्यतः निवास बदलते हुए एक भौगोलिक इकाई से दूसरी इकाई के लिए भौगोलिक गतिशीलता का एक रूप है।''** इसी प्रकार **ई.एस.ली**ने प्रवास को परिभाषित करते हुए कहा **''प्रवास निवास स्थान में एक स्थाई या अस्थाई परिवर्तन का नाम है।''**[2]

अध्ययन का उद्देश्य

उत्तराखण्ड मुख्य रूप से ग्रामीण व्यवस्था वाला राज्य है, जहां कुछ बड़े नगरीय क्षेत्रों के अतिरिक्त पर्वतीय भागों में छोटे कस्बों का विकास बहुतायत में हुआ है। ग्रामीण क्षेत्रों की जनसंख्या मुख्यतः शिक्षा उद्देश्यों की पूर्ति हेतु इन कस्बों की ओर प्रवास कर रही है। रोजगार हेतु होने वाला प्रवास मुख्यतः बड़े नगरों की ओर हो रहा है। इस शोधपत्र का उद्देश्य पर्वतीय क्षेत्रों में प्रवास के कारण तथा उसके प्रभावों का अध्ययन करना है। साथ ही प्रवास को किस प्रकार सन्तुलित किया जाए इस ओर ध्यान आकर्षित करना है।

शोध प्रविधि

इस शोधपत्र में प्रयुक्त किए गए सभी आंकड़े प्राथमिक स्तर पर संकलित किए गए हैं, इसके लिए साक्षात्कार तथा प्रश्नावली विधि का प्रयोग किया गया है। इसमें किसी भी प्रकार के द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग नहीं किया गया है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

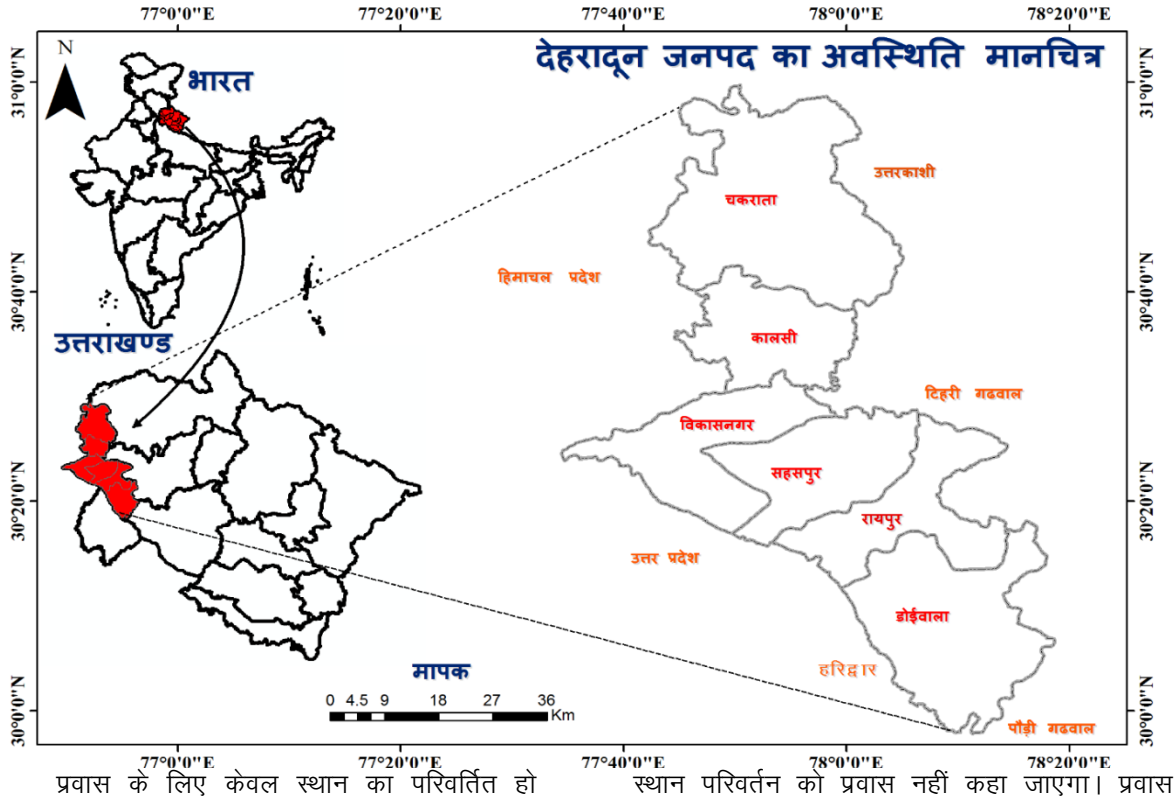

प्रवास के लिए केवल स्थान का परिवर्तित हो जाना पर्याप्त नहीं है अपितु उचित दूरी एवं समयावधि का होना अनिवार्य है। सामान्यतया प्रवास के विषय में यह मान्य है कि एक नगर या गांव से उसी नगर या गांव में स्थान परिवर्तन को प्रवास नहीं कहा जाएगा। प्रवास के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति या समूह के सामाजिक, आर्थिक स्तर में परिवर्तन दृष्टिगोचर हो। इस प्रकार परिवर्तन प्रवास का महत्वपूर्ण अंग है।

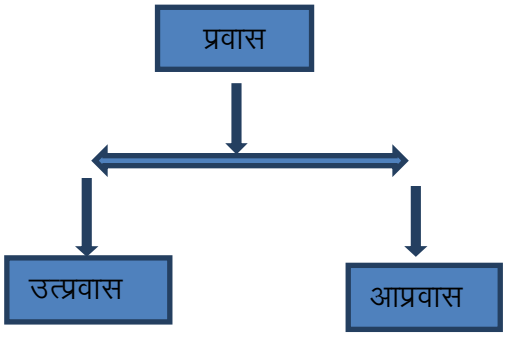

समय के आधार पर प्रवास	प्रवास प्रवाह के आधार पर	संख्या के आधार पर
• स्थाई प्रवास • अस्थाई प्रवास	• गांव से गांव • गांव से नगर • नगर से गांव • नगर से नगर	• एकल प्रवास • सामूहिक प्रवास

उत्प्रवास (Out Migration)

जिस स्थान से जनसंख्या बाहर की जाती है उस स्थान के सन्दर्भ में यह उत्प्रवास कहा जाएगा।

आप्रवास (In Migration)

जहां पर जनसंख्या अन्य क्षेत्रों से प्रभावित होने का परिणाम होती है इस स्थिति को आप्रवास कहा जाएगा।

भारत जैसे विकासशील देश में प्रवास कुछ वर्षों से एक नयी और तेजी से बढ़ने वाली सामाजिक प्रक्रिया बन गयी है। पूर्व समय में प्रवास होता रहा है किन्तु प्रवास की प्रवृति एवं दिशा वर्तमान से भिन्न थी। नगरीय जीवनशैली, कृषि कार्यों से विमुखता से सम्बन्धित है जिसमें प्रतिवर्ष नयी जनसंख्या जुड़ जाती है।

अध्ययन क्षेत्र देहरादून जनपद राज्य का राजधानी क्षेत्र होने के साथ ही सबसे विकसित भाग भी रहा है। इसके अन्तर्गत आने वाले मसूरी, ऋषिकेश, चकराता, देहरादून शहर अपनी अलग–अलग विशेषताओं के कारण जनसंख्या के लिए आकर्षण का केन्द्र रहे हैं। केवल राजधानी क्षेत्र की बात की जाए तो 2001 में जनसंख्या 12.82 लाख थी जो 2011 की जनगणना के अनुसार 16 लाख से अधिक हो चुकी है। इसमें राज्य के प्रत्येक जिले के साथ ही देश के अन्य राज्यों से आने वाले प्रवासी भी सम्मिलित हैं। नगर के अलग–अलग भागों में भिन्न समुदायों की जनसंख्या सामूहिक निवास करती है जिन्हें समुदाय विशेष के नाम से ही जाना जाता है।

प्रवास को प्रभावित एवं प्रेरित करने वाले कारकों को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है–

A. प्रवास को आकर्षित करने वाले कारक
B. प्रवास को प्रतिकर्षित करने वाले कारक

यह दोनों कारक समानान्तर कार्य करते हैं। जो एक क्षेत्र के लिए धनात्मक प्रभाव रखता है, दूसरे क्षेत्र के लिए वही कारक ऋणात्मक कारक के रूप में कार्य करते हैं। सकारात्मक कारक वह हैं जो जनसंख्या को अपनी और आकर्षित करते हैं जैसे रोजगार, कृषि के बेहतर अवसर, अनुकूल जलवायु, निवास योग्य भूमि आदि। इसके विपरीत नकारात्मक कारकों में स्थान की निम्न जीवनशैली, भौगोलिक प्रतिकूलता, सामाजिक पिछड़ापन, रोजगार के अवसरों की कमी आदि कारक हैं जो जनसंख्या को उस स्थान से बाहर की ओर प्रवास करने को प्रेरित करते हैं। इस प्रकार से आर्थिक, सामाजिक, प्राकृतिक और कुछ विशेष स्थितियों में राजनीतिक कारक प्रवास का कारण बनते हैं।

उत्तराखण्ड को अलग राज्य बनाने का मुख्य उद्देश्य पर्वतीय क्षेत्र के विकास को गति देना था। उत्तराखण्ड के बारे में कहा जाता है कि यहां का पानी और जवानी राज्य के काम नहीं आते हैं। आवश्यक सुविधाओं के अभाव में युवा पलायन करते हैं, जिसमें अधिकांश जनसंख्या रोजगार, शिक्षा आदि उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मैदानी क्षेत्रों की ओर आ जाती थी। इस असन्तुलन को कम करने एवं पर्वतीय भाग को भी विकास से जोड़ने हेतु उत्तराखण्ड को अलग पर्वतीय राज्य बनाया गया।

अलग राज्य बनने के बाद हुए विकास तथा सुधार कार्यों के परिणामस्वरूप स्थिति में परिवर्तन हुआ किन्तु प्रवास की दृष्टि से सकारात्मक परिणाम नहीं दिखाई दिए। जो क्षेत्र पहले से ही अपेक्षाकृत विकसित थे वही प्रवास का केन्द्र बने एवं मैदानी भागों में नए कस्बों का विकास हुआ। पर्वतीय राज्य के पर्वतीय भागों को अलग राज्य का अधिक लाभ नहीं मिला।

राज्य का अधिकांश भाग (लगभग 80%) पर्वतीय है तथा बसाव की दृष्टि से तराई, भाभर और दून क्षेत्र ही अधिक समृद्ध रहे हैं। भौगोलिक विषमतायें, नगरीय आकर्षण, जीवनोपयोगी सुविधाओं की कमी के कारण पर्वतीय भागों से मैदानी भागों की ओर जनसंख्या का प्रवास हुआ। युवा जनसंख्या की शैक्षिक तथा रोजगार जैसी आवश्यकताएं नगरीय क्षेत्रों में पूरी हो रही है जिस कारण स्थाई एवं अस्थाई स्थानांतरण बढ़ रहा है। ग्रामीण तथा पर्वतीय उत्तराखण्ड पलायन के प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाया है।

जनपद देहरादून राज्य के रोजगार, शिक्षा और राजनीतिक संभावनाओं का केन्द्र बना है। राजधानी बनने से पूर्व भी जनपद के अन्तर्गत आने वाले मसूरी, ऋषिकेश, चकराता एवं देहरादून शहर अपनी विशेषताओं के कारण प्रसिद्ध रहे हैं और सदैव से ही बसाव की दृष्टि से आकर्षण का केन्द्र है। देहरादून के विश्वस्तरीय शिक्षण संस्थान, ऋषिकेश का आध्यात्मिक आकर्षण, मसूरी और चकराता का सौन्दर्य लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है। इसके साथ ही राज्य के हर जनपद से जनसंख्या का प्रवाह इस क्षेत्र में हुआ है।

एस.गोसल ने अपने अध्ययन में प्रवास को महत्वपूर्ण स्थान देते हुए कहा है ''प्रवास मात्र स्थान परिवर्तन ही नहीं बल्कि किसी क्षेत्र के क्षेत्रीय तत्व एवं क्षेत्रीय सम्बन्धों को समझने का प्रमुख आधार है।''[3]प्रवास के माध्यम से पलायन वाले क्षेत्र एवं आगमन वाले क्षेत्रों के साथ ही प्रवासित होने वाली जनसंख्या के मानसिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति में भी परिवर्तन होता है। अतः प्रवास केवल स्थान का परिवर्तन हो जाना नहीं है अपितु यह एक पूर्ण प्रक्रिया जो दोनों पक्षों पर प्रभाव डालती है।

जनपद देहरादून के चकराता एवं कालसी विकासखण्ड पूर्णरूप से पर्वतीय भाग है एवं विकासनगर, डोईवाला, रायपुर तथा सहरपुर तराई मैदान के अंतर्गत आते हैं। इन्हीं चार विकासखण्ड में अधिकतम जनसंख्या निवास करती है। पर्वतीय भागों की अपेक्षा मैदानों में जनसंख्या संकेन्द्रण अधिक हुआ है।

अध्ययन क्षेत्र का कुछ भाग जनजातीय समूह (जौनसारी) के अन्तर्गत आता है जिनकी कुछ विशिष्ट सांस्कृतिक–सामाजिक विशेषताएं हैं। युवा आयु वर्ग की जनसंख्या स्वयं को पुरातन जीवनशैली से सम्बद्ध नहीं कर पाती है तथा पलायन के कारण यह परम्परायें धूमिल हो रही है। जिन क्षेत्रों से पलायन होता है तथा जहां पर जनसंख्या द्वारा प्रवास किया जाता है दोनों ही स्थानों पर लिंगानुपात, जनघनत्व आदि में असन्तुलन पैदा हो जाता है।

पलायन की प्रक्रिया ने नगरों में आवास, यातायात, स्वच्छता जैसी समस्याओं को विकट बना दिया

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

है। पलायन का दूसरा पक्ष पर्वतीय भागों में खाली होते गांव है जो केवल वृद्धजनों के निवास स्थान बन गये हैं। एक ओर नगरों में निवास योग्य स्थान घट रहे हैं तथा दूसरी ओर ग्रामीण निवास निर्जन हो रहे हैं।

एक ओर आबाद गांवों की संख्या में कमी आयी है तथा दूसरी ओर गैर आबाद गांवों की संख्या में वृद्धि हुई है। जनपद देहरादून में गैर आबाद गांवों की संख्या में विभिन्न समयान्तरालों में परिवर्तन हुआ है। 1991 में गैर आबाद गांवों की संख्या 18 थी जिनकी संख्या 2001 में 20 तक पहुंच गयी। 2001 में पुनः संख्या 15 हो गयी किन्तु इसका कारण गांव में पुनः बसाव न होकर सीमा परिवर्तन हैं।

जनपद देहरादून में आबाद गांवों की संख्या

समय	1991	2001	2011
आबाद गांव	746	738	731

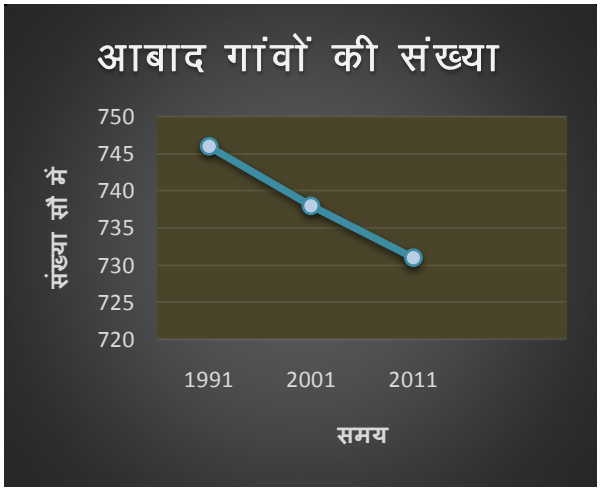

जनसंख्या के तीन दशकों के आंकड़ों से यह निष्कर्ष देखते हैं कि नगरीय जनसंख्या में वृद्धि हुई है। 1991 में कुल जनसंख्या का 53.52 प्रतिशत नगरों में निवास करता था जिसमें वृद्धि के उपरान्त 2011 में यह 55.52 प्रतिशत हो गयी है।

प्रवास के परिणामस्वरूप जनसंख्या के वितरण में असमानता बढ़ी है। पर्वतीय भाग जनहीन हो रहे हैं। जबकि मैदानी क्षेत्रों में आधिक्य की स्थिति उत्पन्न हो रही है। दैनिक अखबार अमर उजाला के अगस्त 2015 के अंक में छपी रिपोर्ट के अनुसार 2011 की जनगणना में सर्वाधिक जनसंख्या देहरादून तहसील में निवास करती है जबकि त्यूनी तहसील सबसे कम जनसंख्या वाली तहसील बनी है।

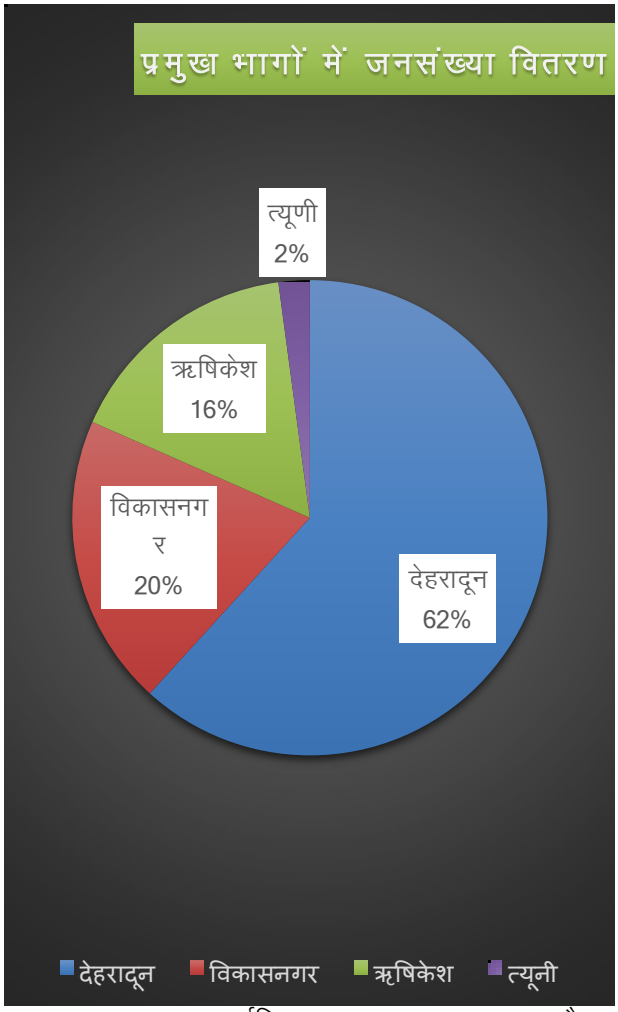

प्रवास का सर्वाधिक नकारात्मक प्रभाव रहा है असन्तुलित विकास पर्वतीय क्षेत्र विकास के उद्देश्य हेतु राज्य अस्तित्व में आया किन्तु लाभ अभी भी वही ले रहे हैं जो पहले से ही अपेक्षाकृत लाभान्वित थे। यह असन्तुलन कृषि, उद्योग, सामाजिक, आर्थिक स्तर पर देखा जा सकता है। मैदानों में उद्योगों के साथ ही अन्य रोजगारोन्मुख सुविधाओं का विकास हुआ। इसके विपरीत ग्रामीण स्तर के व्यवसाय धीरे–धीरे पहचान और अस्तित्व खो रहे हैं। ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले राज्य में खाली होते गांव चिंता का विषय बन गये हैं।

जनपद देहरादून में प्रवास का अध्ययन किया जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि आर्थिक, सामाजिक विकास के साथ–साथ प्रवास की प्रवृतियों में भी परिवर्तन देखने को मिले है। उत्तराखण्ड के सन्दर्भ में देखा जाए तो ग्रामीण पृष्ठभूमि होने के कारण प्रवास अधिक गतिशील अवस्था में नहीं था किन्तु अलग राज्य बनने के बाद स्थिति में परिवर्तन देखने को मिला है। छोटे कस्बों का विकास हुआ जिसके परिणामस्वरूप गांव से प्रवास को प्रोत्साहन मिला। बेहतर जीवन शैली और सुविधाओ के लिए लोग गांव से शहरों की तरफ जा रहे हैं। अध्ययन क्षेत्र दोनों परिस्थितियों में हानि प्राप्त कर रहा है।

यहां पर प्रवास की स्थिति को जानने के लिए प्राथमिक आंकड़ों को दर्शाया गया हैं इसके लिए कुल

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बारह गांवों का चयन किया गया है। जिसमें छः गांव पर्वतीय तथा छः मैदानी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रथम सारणी में उत्प्रवास तथा आप्रवास के आंकड़ें दिए गये हैं, जिसमें मैदानी की अपेक्षा पर्वतीय क्षेत्रों में उत्प्रवास का प्रतिशत अधिक दिखाई देता है। इसके विपरीत आप्रवास में मैदानी भाग का प्रतिशत अधिक है। यह आंकड़ें उपरोक्त विवरण में दिए गए कारणों से पहाड़ों से मैदान की ओर हो रहे प्रवास को इंगित करता है।

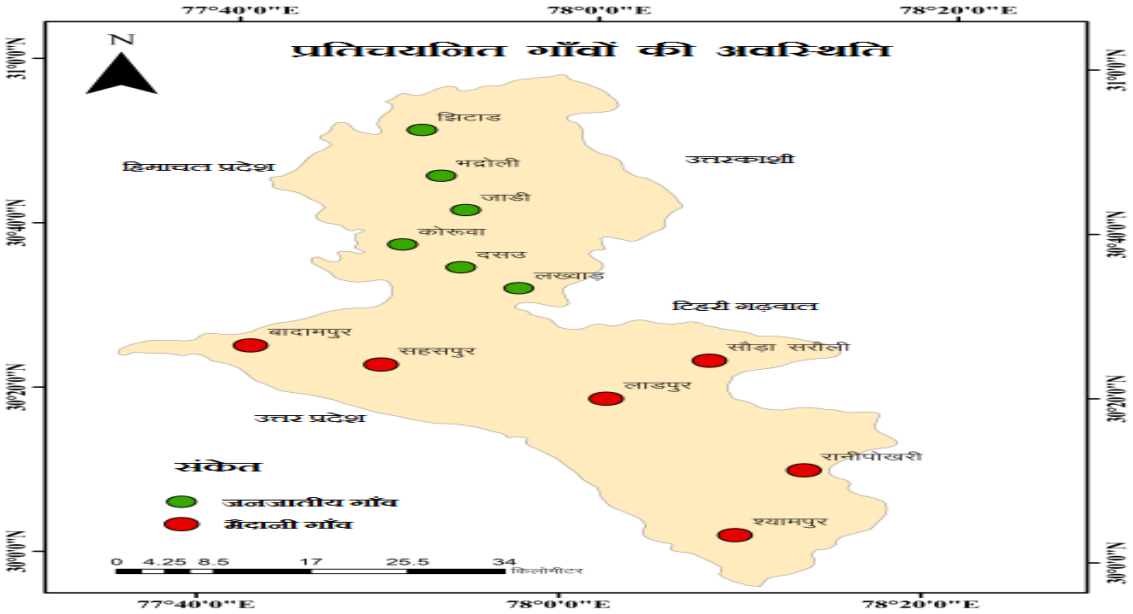

प्रतिचयनित गांवों में प्रवास की स्थिति (2016)

क्रम संख्या	प्रवास (प्रतिशत में)		
	गंव	आप्रवास	उत्प्रवास
1.	झिटाड	18.65	48.76
2.	भद्रोली	16.84	33.57
3.	जाड़ी	21.05	29.04
4.	कोरुवा	19.32	41.63
5.	दसऊ	14.84	19.59
6.	लख्वाड़	9.65	37.9
7.	बदामवाला	33.86	18.54
8.	स्हसपुर	49.75	12.69
9.	लाडपुर	52.64	7.83
10.	सौडा सरौली	55.79	4.79
11.	रानीपोखरी	64.97	8.06
12.	श्यामपुर	69.73	9.39

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

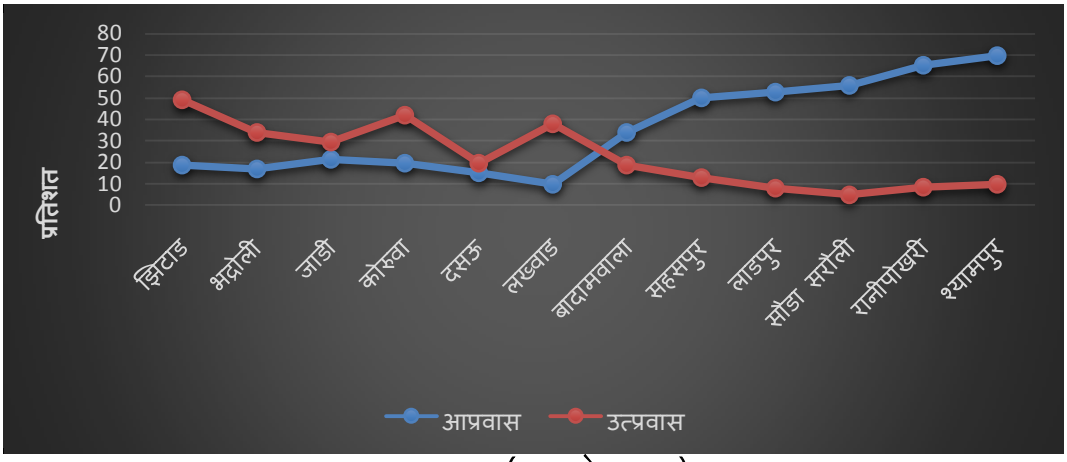

प्रवास प्रवाह (2016 के अनुसार)

क्रम संख्या	प्रवास प्रवाह(प्रतिशत में)			
	गांव	गांव से शहर	शहर से गांव	गांव से गांव
1.	झिटाड	48.78	6.26	12.39
2.	भद्रोली	33.57	3.15	13.69
3.	जाड़ी	29.04	2.64	18.41
4.	कोरुवा	41.63	0.99	18.33
5.	दसऊ	19.59	1.26	13.58
6.	लख्वाड़	37.9	2.41	7.24
7.	बादामवाला	18.54	7.76	26.1
8.	सहसपुर	12.69	7.84	41.91
9.	लाडपुर	7.83	12.43	40.21
10.	सौडा सरौली	4.79	13.89	41.9
11.	रानीपोखरी	8.06	23.41	41.56
12.	श्यामपुर	9.39	25.87	43.86

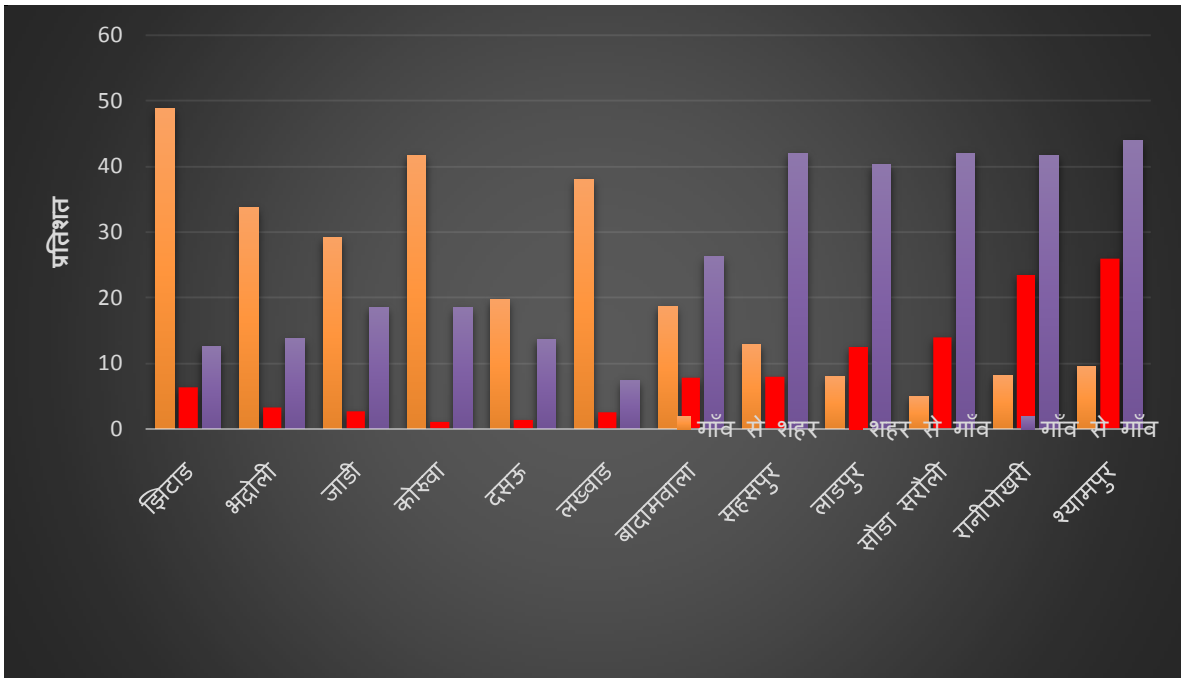

दूसरी सारणी में तीन श्रेणियों में प्रवास प्रवाह को दर्शाया गया है। तीनों श्रेणियों के तुलनात्मक अध्ययन के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि गांव से शहर की ओर आने वाली जनसंख्या का प्रतिशत अधिक है। जहां

मूलभूत आवश्यकताओं की कमी है, यह प्रवृत्ति उन क्षेत्रों में अधिक दिखाई देती है। शहर से गांव की तरफ प्रवास करने वाली जनसंख्या का प्रतिशत सर्वाधिक निम्न है। इसमें अवकाश प्राप्त आयु के व्यक्ति अधिक हैं जो शान्त जीवनयापन हेतु अपने मूल स्थान पर लौट आते हैं। कुछ युवा वर्ग स्वयं के रोजगार सृजन के लिए गांवों की ओर प्रवास कर रहे हैं जो एक अच्छा संकेत है।

जनपद देहरादून भौगोलिक रूप से पर्याप्त भिन्नता लिए हुए है, जिसमें उत्तरी भाग पूर्णतः पर्वतीय है जिसमें केवल कुछ घाटियां मानव बसाव के योग्य है। मध्य एवं दक्षिणी भाग तराई–भाभर के अन्तर्गत आते हैं, जहां पर जनपद की अधिकतम जनसंख्या का निवास है। जलवायु, मृदा, ढाल आदि अन्य भौगोलिक कारक हैं जिनका प्रभाव जनसंख्या के घनत्व तथा विवरण पर दिखाई देताहै।

देहरादून जनपद राज्य का केवल 5 प्रतिशत भू–भाग है तथा यहां पर कुल जनसंख्या का 16.8 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। यही भिन्नता स्थानिक स्तर पर भी दिखाई देती है, चकराता एवं कालसी विकासखण्ड जनवृद्धि में अन्य विकासखण्डों की तुलना में पीछे हैं। इसका प्रमुख कारण शिक्षा एवं रोजगार के लिए होने वाला पलायन है।

जनपद देहरादून की धरातलीय एवं जलवायुगत भिन्नताओं के अनुसार कृषि को विकसित कर आर्थिक दृष्टि से उपयोगी बनाया जा सकता है। पर्वतीय भागों में कृषि केवल जीवन निर्वाह के साधन के रूप में की जाती है जिसका आर्थिक महत्व गौण है। कृषि की पिछड़ी स्थिति एवं उसमें रोजगार का अभाव होने के कारण अधिकांश जनसंख्या इससे विमुख हुई तथा अन्य स्थानों पर रोजगार का अभाव होने के कारण अधिकांश जनसंख्या इससे विमुख हुई तथा अन्य स्थानों पर रोजगार हेतु प्रवास कर रही है। अतः आवश्यक है कि कृषि पद्धति में नई तकतीकी को जोड़कर अधिक उत्पादक बनाया जाए।

इसके अतिरिक्त कृषि से सम्बन्धित अन्य कार्यों जैसे डेरी, फल, जड़ीबूटी, फूल, शहद उत्पादन के साथ ही जनजातीय परम्पराओं से जोडने वाली हस्त कलाओं को प्रोत्साहन दिया जाए। पारम्परिक उद्योगों, जनजातीय कौशल को इनके मौलिक निवास पर संरचनात्मक एवं आर्थिक सुविधायें उपलब्ध करवाई जाए जिससे रोजगार हेतु होने वाले पालन को नियन्त्रित किया जा सके। अविकसित तथा पिछड़े क्षेत्रों को उनके भूगोल, सामाजिक–आर्थिक स्थिति के अनुसार विकास की योजनाओं से जोड़े जाने की आवश्यकता है।

शिक्षा एवं स्वास्थ्य जनसंख्या के प्रतिरूप पर प्रभाव डालने वाले महत्वपूर्ण कारक है। दोनों क्षेत्रों में सेवाओं की गुणात्मकता सुधार की असीमित सम्भावनाएं है। पर्वतीय क्षेत्रों में उन्नत शिक्षा सुविधाओं से युक्त आवासीय स्कूल खोले जा सकते हैं। यह स्थानीय जनमानस को शिक्षा सुविधा एवं रोजगार प्रदान करने में सहायक होगा। एक ही स्थान विशेष पर सम्पूर्ण जनसंख्या को खाद्य, रोजगार, निवास की उचित सुविधायें प्रदान कर सकना हमारे जैसे कम संसाधन तथा अधिक जनसंख्या वाले देश के लिए करना सम्भव नहीं है। अतः विकास कार्यों के नियोजन तथा उनके कार्यान्वयन में सभी स्थानों को समान महत्व दिया जाए जिससे जनसंख्या का प्रवाह विकेन्द्रीकृत हो सके।

निष्कर्ष

वर्तमान में प्रवास को विकास का पर्याय माना जा रहा है। एक सीमा तक यह सत्य प्रतीत होता है किन्तु यह प्रवास केवल एक पक्ष दिखाता है। उपर्युक्त विवरण में हमने प्रवास के कारणों को देखा है जिसमें शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य प्रमुख कारण हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में इन सुविधाओं की कमी के कारण प्रतिवर्ष लोग गांवों से शहर की ओर पलायन कर रहे हैं। इसमें भौगोलिक कारकों का भी योगदान रहा है, किन्तु इसमें असन्तुलित विकास के पक्ष को नकारा नहीं जा सकता है। यदि पर्वतीय क्षेत्रों में भी आवश्यक एवं मूलभूत सुविधाओं को बढ़ावा दिया जाए। इस स्थिति में परिवर्तन किया जा सकता है। प्रवास का सम्बन्ध आवश्यकताओं की पूर्ति से है। यही कारण है कि पर्वतीय क्षेत्रों से सम्बन्धित गांवों में उत्प्रवास (out migration) का प्रतिशत अधिक है जबकि इसके विपरीत मैदानी भागों में सुविधाओं के कारण यहां पर आप्रवास (In Migration) अधिक हुआ है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप जनसंख्या का जमाव जनपद के कुछ विशेष क्षेत्रों में केन्द्रित हो रहा है तथा कुछ भाग जनविहीन हो गये हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

Triwartha, G.T. (1951) – The Case for Population Geography

Lee, E.S.(1966)The Theory of Migration : Demography, Vol 3

Gosal, G.S. (1961)दी रिजनॉलिज्म इन सेक्स कम्पोजीशन ऑफ इण्डियाज पॉपुलेशन, रूरल सोसियोलॉजी, अंक 26।

चंदना, आर.सी. –जनसंख्या भूगोल 1995, कल्याणी पब्लिकेशन नई दिल्ली

सांख्यिकीय पत्रिका जनपद देहरादून 1991,2001,2011

जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 2012,2013

समाचार पत्र, पत्रिकाएं

प्राथमिक आंकड़ा संग्रहण